International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications
ISSN: 2319-7471, Volume 7 Issue 1, January-2018, Impact Factor: 3.578

छायावाद का अर्थ, उदय के कारण, विशेषताएँ व रहस्यवाद व स्वच्छंतावाद से इसका संबंध

Suman devi

सार

छायावाद 1918–1936 ई. तक चला हिंदी कविता के इतिहास का प्रसिद्ध आंदोलन है जिसमें चार प्रमुख कवि शामिल रहे हैं– जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा। इस आंदोलन के मूल्यांकन को लेकर इनते अधिक विवाद हैं कि कुछ लोग इसे आधुनिक काल का स्वर्ण युग कहते हैं तो कुछ अन्य की निगाह में यह आंदोलन अपनी सामाजिक जिम्मेदारीयों से कटा होने के कारण विशेष सम्मान का पात्र नहीं हैं। लंबे समय तक हुए विवादों के बाद हिंदी समीक्षा की वर्तमान औसत राय यह है कि छायावाद अपने समय के दायित्वों को गंभीर और सूक्ष्म स्तर पर निभाने वाला आंदोलन था और यह निश्चित तौर पर हिंदी साहित्य की एक महती उपलब्धि है।

छायावाद की उपयुक्त समझ के लिए यह जानना जरूरी है कि छायावाद एक स्थिर आंदोलन न होकर अपनी प्रकृति में विकसनशील रहा है। 1918 के आसपास इन कवियों ने जैसी भाव प्रवण कविताएँ लिखी, वे उन कविताओं से काफी अलग हैं जो यही कवि 1930–36 के दौर में लिख रहे थे। इसलिए छायावाद के मूल्यांकन में यह द्वंद्व हमेशा रहता है कि किस दौर की कविताओं को आधार बनाकर निष्कर्ष निकाले जाएँ।

भूमिका

'छायावाद' शब्द के अर्थ के सम्बन्ध में विद्वानों ने विभिन्न मत दिए परंतु छायावाद की कोई एक निश्चित परिभाषा कभी तय नहीं हो सकी। इस शब्द के प्रथम प्रयोक्ता मुकुटधर पांडेय ने अपने निबंधों में छायावाद की पाँच विशेषताओं का उल्लेख किया है जो इस प्रकार हैं– (1) वैयक्तिकता, (2) स्वातंत्र्य चेतना, (3) रहस्यवादिता, (4) शैलीगत वैशिष्ट्य (5) अस्पष्टता

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने छायावाद की परिभाषा इस अनोखे अंदाज में की–"छायावाद से लोगों का क्या मतलब है, कुछ समझ में नहीं आता। शायद उनका मतलब है कि किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े तो उसे छायावादी कविता कहना चाहिए।"

आचार्य शुक्ल भी छायावाद के प्रति सकारात्मक नहीं थे। उन्हें लगता था कि स्वच्छंतावाद की स्वच्छ व प्रांजल धारा के विकास को छायावादी कवियों ने अपने रहस्यवादी व प्रतीकवादी विकास के माध्यम से रोक दिया। उन्होंने छायावाद की व्याख्या रहस्यवाद व प्रतीकवाद के रूप में ही की और प्रायः उसे हिंदी साहित्य की नकारात्मक प्रवृति के रूप में देखा।

शुक्ल जी के बाद कुछ समीक्षकों ने छायावाद को सकारात्मक नजरिए से देखने की कोशिश की। सबसे पहले आचार्य शांतिप्रिय द्विवेदी ने छायावाद को गांधीवाद के साहित्विक संस्करण के रूप में पहचान दिलाने की कोशिश की।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने छायावाद नाम के प्रति अरूचि जाहिर करते हुए कहा कि–"छायावाद शब्द केवल चल पडने के जोर से ही स्वीकारणीय हो सका है, नहीं तो इस श्रेणी की कविता की प्रवृति को प्रकट करने में यह शब्द एकदम असमर्थ है। बहुत दिनों तक इस काव्य का उपहास किया गया है और बाद में भी इसे या तो चित्रभाषा–शैली या प्रतीक पद्धति के रूप में माना गया या फिर रहस्यवाद के अर्थ में।"

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने पहली बार आचार्य शुक्ल की छायावाद संबंधी धारणाओं को गंभीर टक्कर दी। उन्होंने स्पष्ट किया कि छायावाद और रहस्यवाद पर्यायावाची नहीं हैं। छायावाद का एक अंश भले ही रहस्यात्मक हो किंतु छायावाद की वास्तविक पहचान उस अंश से होती है जो राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रश्नों से जूझ रहा था। इसके अलावा, उन्होंने दावा किया कि छायावाद में जो रहस्यवाद है, वह भी मध्ययुगीन रहस्यवाद से काफी अलग है।

स्वच्छंतावादी समीक्षक डॉ. नगेन्द्र छायावाद की सकारात्मक व्याख्या के लिए विख्यात हैं। उन्होंने इसकी परिभाषा यह कहकर की कि– "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।"

डॉ. नामवर सिंह मार्क्सवादी समीक्षक हैं किंतु उन्होंने छायावाद की व्याख्या एकदम नए अंदाज में की। उनसे पहले, मार्क्सवादी समीक्षक प्रायः छायावाद को लेकर बहुत सकारात्मक नहीं थे किंतु डॉ. नामवर सिंह की पुस्तक श्छायावादय ने इस आंदोलन को समझने का एक नया नजरिया प्रस्तुत किया जिसका सार यह है कि छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर पुरानी रूढियों से मुक्ति चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से।

छायावाद के उदय के कारण, परिस्थितियाँ

बीसवीं शती के दूसरे दशक के उत्तरार्द्ध में हिंदी कविता में एक नयी प्रवृत्ति का उदय हो रहा था जो पूर्व की काव्य प्रवृत्तियों से ही नहीं, बल्कि द्विवेदी युग की वस्तुवादी–नैतिकतावादी दृष्टि से भी भिन्न थी। इसी उदित होती नयी प्रवृत्ति, जिसे स्वच्छंतावाद (रोमांटिसिज्म) कहा जाता है, ने

छायावाद के लिए पृष्ठभूमि तैयार की। यह वही काव्यधारा है जिसे द्विवेदी युग के दौरान श्रीधर पाठक के नेतृत्व में कई कवि चला रहे थे और मनुष्य और कवि की स्वच्छंदता पर बल दे रहे थे। हालाँकि आचार्य शुक्ल की राय में छायावाद स्वच्छंतावाद का विकास नहीं बल्कि उसके विकास–मार्ग में आ खड़ा हुआ एक अवरोध हैय किंतु वर्ममान हिंदी समीक्षा की सामान्य राय यही है कि छायावाद स्वच्छंतावाद का ही अगला चरण है। इस राय को पहली बार आचार्य नंदुदलारे वाजपेयी ने रखा था और वर्तमान में इस पर प्रायः सहमति कायम हो चुकी है।

पुनर्जागरण से प्रेरित यूरोप के स्वच्छंतावादी साहित्यिक आंदोलन ने भारतीय मध्यवर्ग की सोच और संवेदना को नया धरातल दिया। मुक्ति की जैसी इच्छा और छटपटाहट भारत का मध्यवर्ग इस समय महसूस कर रहा था, वैसी ही भावना तत्कालीन यूरोपीय समाज में मौजूद थी। इसलिए यह स्वाभाविक था कि नये कवि उनके काव्य से प्रेरणा लेते। कीट्स, बायरन, वड्र्सवर्थ, कोलरिज, शैली आदि रोमांटिक कवियों के काव्य और उनके लेखन ने उन्हें सोचने–समझने का नया क्षितिज प्रदान किया।

इस काल की सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियों ने भी छायावाद के उद्भव में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रथम विश्वयुद्ध ने साम्राज्यवाद के समूचे ढाँचे पर स्थायी और जबरदस्त प्रहार किया। 1917 की रूसी क्रांति ने भी संपूर्ण विश्व पर अपना प्रभाव जमाया। भारत में भी इसी दौर में जन आंदोलनों का सूत्रपात हुआ। इससे पहले तक भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असंतोष केवल चिट्ठियों, आवेदनों और लेखों से ही अभिव्यक्ति रहा था।

छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. स्वातंत्र्य चेतनाः– छायावादी काव्य की केन्द्रीय चेतना स्वंतत्रता की चाह है। यहाँ स्वतंत्रता केवल एक राजनीतिक मांग नहीं वरन् जीवन–मूल्य है। यह
स्वतंत्रता रूढियों से, धर्म, से, समाज से है। निराला लिखते हैं– "तोड़ो–तोड़ो तोड़ो कारा, निकले फिर गंगाजल धारा।"
2. वैयक्तिकताः– छायावादी युग में पहली बार कवि ने स्वतंत्र होकर स्वंय के जीवन की घटनाओं का वर्णन किया। महादेवी ने कहा कि "आज का रचनाकार अपनी हर साँस का इतिहास कह देना चाहता है।"
3. अनुभूति की प्रतिष्ठाः– प्रसाद का भी मानना था कि कविता में स्वानुभूति की विवृति होती है। पंत लिखते हैं–

"वियोगी होग पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
निकलकर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।"

4. जिज्ञासाः– इन कवियों ने दिए हुए सत्यों का तर्को के आधार पर विरोध किया तथा खुद अपने सत्य खोजने का प्रयास किया। इस जिज्ञासा ने इन्हें कल्पनाशील बनाया। प्रसाद ने कहा कि कल्पना मानव जीवन का प्राण है।

5. वेदना की विवृत्तिः– छयावादी कविता वेदना से भरी है, पर यह वेदना पीड़ा नहीं देती बल्कि काम्य व सुन्दर है।

6. प्रेमानुभूतिः– यहाँ प्रेम अशरीरी है, भोगवादी नहीं है। यहाँ प्रेम में नारी, देवी, माँ, सहचरी, प्राण्य है। यहाँ प्रेम में उपलब्धि की चाह नहीं वरन् समर्पण का भाव है– "पागल रे! वह मिलता है कब, उसको तो देते ही हैं सब।"

7. सौन्दर्य चेतनाः– छायावादी सौन्दर्य की चित्रशाला है "सुन्दर हैं सुमन, विहग सुन्दर, मानव तुम सबसे सुन्दरतम।

8. प्रकृति चित्रणः– छायावाद में प्रकृति इस तरह समा गई है कि छायावाद से उसे अलग करना संभव नहीं। मानवीकरण का एक उदाहरण इस प्रकार है– "मेघमय आसमान से उतर रही है/संध्या सुन्दरी परी सी/धीरे–धीरे–धीरे।"

9. राष्ट्रीय स्वरः– छायावादी कवि को राष्ट्र और संस्कृति की व्यापक एवं गौरवमयी धरोहर से प्यार है।

10. काव्यरूपः– छायावाद में प्रगीतों की रचना हुई जिनमें निराला के प्रगीत अग्रणी हैं। महादेवी ने गीत लिखे। निराला, पंत व प्रसाद ने लम्बी कविताएँ भी लिखी।

11. भाषाः– छायावाद ने कर्कश कही जाने वाली खड़ी बोली में कोमल भावों को प्रस्तुत करने की चुनौती को स्वीकार किया।

12. छंदः– छायावाद कवियों ने अर्थालंकारों का पर्याप्त प्रयोग किया क्योंकि गहरे भावों की अभिव्यक्ति सीधे–सीधे नहीं हो पाती।

13. बिम्बः– छायावादी कवियों ने बिंबों का सफल प्रयोग करके काव्य को अत्यधिक मार्मिक बनाया।

14. प्रतीकः– छायावादी कविता सूक्ष्म व अमूर्त कथ्य को व्यक्त करने के प्रयास में प्रतीकात्मक हो जाती है। आचार्य शुक्ल ने तो इसे 'प्रतीकवाद' से प्रभावित आंदोलन ही माना है। इसमें वैचारिक प्रतीकों की भी रचना हुई है। उदाहरण के लिए, राम की शक्ति पूजा में राम राष्ट्रीयता के प्रतीक हैं तो रावण ब्रिटिश सत्ता का प्रतीक है।

छायावाद एवं स्वच्छंदतावाद

पश्चिमी साहित्यचिंतन में रूसो की प्रेरणा तथा विलियम वर्ड्सवर्थ और सैमुअल टेलर कॉलिरज के नेतृत्व में एक साहित्यिक आंदोलन का सूत्रात 18वीं सदी के अंत में हुआ जिसे अंग्रेजी समीक्षा में 'रोमांटिसिज्म' कहा जाता है। आचार्य शुक्ल ने इस शब्द का अनुवाद 'स्वच्छंदतावाद' किया। उनका दावा है कि द्विवेदी युगीन साहित्य में श्रीधर पाठक के नेतृत्व में एक विशेष धारा दिखाई देती है। जिसे प्रवृत्तियों के आधार पर 'स्वंच्छंदतावाद' कहा जा सकता है।

स्वच्छंदतावाद और छायावाद के संबंधों की आरंभिक व्याख्या आचार्य शुक्ल ने की। उनका मत है कि द्विवेदी युग में श्रीधर पाठक के नेतृत्व में स्वच्छंदतावाद की जिस धारा का आरंभ हुआ, वह हिंदी साहित्य के विकास में एक नया तथा सार्थक दृष्टिकोण लेकर आई थी। इन कवियों ने पहली बार जगत की सच्चाई और वैयक्तिकता जैसे मूल्यों की स्थापना की। उदाहरण के लिए श्रीधर पाठक की निम्नलिखित पंक्तियाँ इसी दृष्टिकोण का प्रतिपादन करती हैं–

1. "जगत है सच्चा, तनिक न कच्चा, समझो बच्चा, इसका भेद।"
2. "लिखो, न लेखनी करो बंद, श्रीधर सम सब कवि स्वच्छंद।"

छायावादी रहस्यवाद भी स्वच्छंदतावाद का ही अगला चरण है। स्वच्छंदतावादी कवियों ने स्वतंत्रता की मांग की किंतु बाद में जब महसूस किया कि सामाजिक दबाव बेहद कठोर व अनमनीय हैं तो स्वच्छंदतावाद ही रहस्यवाद में परिणत हो गया।

छायावाद एवं रहस्यवाद

छायावाद के संबंध में आचार्य शुक्ल का विचार है कि यह कविता अपने बहुलांश से रहस्यवाद का ही एक रूप है। इस संबंध में हिन्दी समीक्षा में दो विवाद हैं– पहला, क्या छायावाद को रहस्यवाद कहा जा सकता हैं और दूसरा, क्या यह रहस्यवाद मध्ययुगीन रहस्यवाद है जो भक्तिकाल में भी दिखाई देता है।

रहस्यवाद वह तीव्र भावनात्मक संबंध है जो किसी अव्यक्त या अज्ञात सत्ता के प्रति पैदा होता है। रहस्यवादी व्यक्ति अपने अमूर्त प्रिय के विरह की बेचनी भी महसूस करता है तथा मिलन की तीव्र उत्कंठा भी उसे उद्वेलित करती रहती है। छायावाद में ऐसी कई कविताएँ दिखाई देती हैं जिनमें किसी न किसी रूप में रहस्यात्मकता या धुंधलापन मौजूद है। इसके बावजूद यह कहना ठीक नहीं कि छायावाद व रहस्यवाद परस्पर पर्यायवाची हैं। छायावादी काव्य का एक अंश ही रहस्यात्मक है जो 'महादेवी' व 'पंत' के काव्य में मिलता है। उदाहरण के लिए, महादेवी कहती हैं–

"अपने इस सूनेपन की मैं हूँ रानी मतवाली,
प्राणों का दीप जलाकर करती रहती दीवाली।"

निष्कर्ष

समग्रतरू छायावाद व रहस्यवाद के सम्बन्धों के विषय में यही कहा जा सकता है कि छायावादी कविता का एक अंश ही रहस्यवादी है, न कि संपूर्ण छायावादी। जो अंश रहस्यवादी है, उसका एक पक्ष अलौकिक रहस्यवाद का है किन्तु वह मध्ययुगीन रहस्यवाद की अन्य विशेषताओं को धारण नहीं

करता। जो शेष अंश है, वह अपनी विषयवस्तु व चेतना दोनों स्तरों पर आधुनिक है और उसका जन्म या तो अतिशय जिज्ञासा से हुआ है या सामाजिक दबावों से। छायावाद के यंत्रगृह में एक समय कर्कष समझी जाने वाली खड़ी बोली गलकर मोम हो गई। कामायनी के रहस्य में त्रिपुरा की अवतारणा करते हुए कवियों ने समरसता का दार्षनिक विवेचन प्रस्तुत किया है।

संदर्भः–

ज्तनमउंदेष्ै चमबपपिब `मतपमे
हिंदी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र
हिंदी साहित्य का इतिहास–रामचन्द्र षुक्ल